प्रातः क्लास 30/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

" बाप सावधान कर रहे हैं अपन को आत्मा समझ बाप की याद में बैठो। स्वीटहोम और सुखधाम को याद करते रहो। यह भूलो नहीं। बुद्धि और–2 तरफ नहीं जानी चाहिए। इसलिए ही बाप सावधानी देते हैं कि अपन को आत्मा समझ बैठो और बाप को याद करो। शान्तिधाम, सुखधाम को याद करो।

.....– : याद की यात्रा : –.....सुखधाम और शान्तिधाम की याद.....

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। अभी रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की स्मृति आई है। समझ में आया है कि बरोबर रूहानी बाप भी आया है। हर वर्ष शिवजयन्ती भी मनाते हैं। जो भी पास्ट हो गया है भक्तिमार्ग में उन्हों के चित्र बनाकर पूजते हैं। तुम जानते हो शिवबाबा का भी चित्र था। जरूर होकर गये हैं जिस कारण फिर भक्तिमार्ग में पूजते हैं। अच्छ अम्बा का तो चित्र था ना। होकर गई है तब फिर पूजी जाती है। वह पास्ट होकर गये हैं। अम्बा को भी पूजते थे अभी भी पूजते हैं। शिव को भी पूजते थे। उनको निराकार कहते थे। यह बाप स्मृति दिलाते हैं। जगतअम्बा भी थी। यानी जगत की माँ। और श्रील0, भल उनको भी माता ही कहते थे; परन्तु वह विश्व की महारानी थी। उनको तो बहुत जेवर आदि पड़े हुए थे। वह तो थी सतयुग के महारानी। अच्छा, जगत अम्बा कब थी? यह कोई को भी पता नहीं है। इतना जानते हैं श्री ल0ना0 सतयुग में थे। उस समय उन्हों की राजधानी थी। यह बच्चों की स्मृति में है। अभी तो वह ल0 नहीं है। वह पवित्र पूज्य थी। इस समय उन्हों की पूजा होती आ रही है। जगतअम्बा कब थी यह किसको भी पता नहीं है। अम्बा थी, तो बाबा भी था। जिसको प्रजापिता कहते हैं। अजमेर में भी उनका मंदिर है। वह कब आई थी यह भी नहीं जानते। तुम भी नहीं जानते थे। अपने दिल से पूछो हम जानते थे? तो बच्चे जानते हैं अम्बा भी थी, बाबा भी था। दोनों साधारण ही थे। दोनों के मंदिर में भी जेवर आदि कुछ भी नहीं दिखाते हैं। माँ तो एक ही होगी ना जगत की। वह है बेहद की माँ। बहुत तो नहीं होगी। उनका फीचर्स भी एक ही होगा। भक्तिमार्ग में कितने अम्बा के चित्र बनाये हैं। कितनी भुजाएँ दे दिये हैं। इतनी भुजाएँ तो होती ही नहीं। जैसे ब्रह्मा के लिए कहते हैं 4 भुजाएँ, 10 भुजाएँ, 100/200 भुजाएँ.....यह सभी हैं इतने बच्चे हैं। तो इतनी भुजाएँ दे दी हैं। अनगिनत। वास्तव (भुजा)एँ तो दो ही होती हैं। तो वह सभी है भक्तिमार्ग का ज्ञान। अभी तुमको स्मृति में आया। और किसकी स्मृति में नहीं आ सकता। शिवबाबा का भी मंदिर है। जगतअम्बा, प्रजापिता ब्रह्मा के भी मंदिर ढेर हैं। सिर्फ किसको पूरा मालूम नहीं है कि वह कब होकर गये हैं। तुम बच्चों की बुद्धि में सारी सृष्टि के आदि ...त का ज्ञान है। मुख्य चित्र ही यह होनी चाहिए। जास्ती चित्र तो है नहीं। मंदिर कितने ढेर बनाई है और नाम रखते गये हैं। शिव तो एक ही हैं। उनका शेप भी एक ही है। बिन्दी है। उसमें ज़रा भी फर्क नहीं पड़ सकता। बाकी हर आत्मा में जो संस्कार हैं उनमें बहुत फर्क है। सन्यासी भी अपन को महात्मा कहलाते हैं। कृष्ण को भी महात्मा कहते हैं; परन्तु उनमें फर्क तो बहुत है ना। तुम समझते हो सन्यासी घर–बार छोड़ते हैं कृष्ण को तो घर–बार नहीं छोड़ना पड़ता। वह तो एवर पवित्र, सन्यासी ही है। सन्यासी तो अपवित्रता से (विख) जन्म ले फिर पवित्र बनने की कोशिश करते हैं। तो उनको कहा जाता है सन्यासी। तुमको बेहद की सन्यासी कहेंगे। तुम सन्यास सारे बेहद की दुनिया का करते हो। तुम पढ़ते हो नई दुनिया के लिए। ऐसा स्कूल कब सुना जहाँ दूसरे जन्म के लिए पढ़ते हो। अर्थात् फल दूसरे जन्म में मिलता हो। तुम पढ़ते हो नई दुनिया के लिए। वह पढ़ाई पढ़ते हैं बैरीस्टर इंजीनियर आदि बनने लिए। अभी तो समय ही थोड़ा है। समझा जाता है पढ़ाई तो सारी व्यर्थ हो जावेगी। बाकी कितने वर्ष पढ़ेंगे। पढ़ने लिए माता–पिता पैसे तो देते ही हैं इससे तो रूहानी पढ़ाई क्यों न (पढ़ें)। तो उससे 21 जन्मों का वरसा मिल जावेगा। समझ की बात है ना। वह है बेसमझ। बाप आकर समझ देते हैं। तो क्यों न यह पढ़ाई पढ़ें जो भविष्य में विश्व का मालिक बन जावेंगे। क्योंकि – – – – – –

अभी यह पुरानी दुनिया चेंज हो रही है। तुम्हारे सिवाय कोई मनुष्य नहीं जिसको यह पता हो कि नई दुनिया की स्थापना के लिए यह पढ़ाई है। नई दुनिया में तो यह देवी देवताओं का ही राज्य था। वह कैसे स्थापन होता है यह मनुष्य नहीं जानते। बाप बैठ समझाते हैं। ल0ना0, जगतअम्बा, राम–सीता आदि सभी का राज़ समझाते हैं। हिंसा की कोई बात ही नहीं। यह तुम्हारी युद्ध है माया के साथ। जिसमें ही हार खाते हैं इसलिए चन्द्रवंशी क्षत्री कहा जाता है। पढ़ाई से ही पद मिलता है ना। अभी तुमको स्मृति आई है। जो फेल होंगे वह चन्द्रवंशी में चले जावेंगे। तुम्हारी तो युद्ध है माया के साथ न कि कौरवों पाण्डवों की युद्ध चली है। बाप है सबका पण्डा। कहते भी हैं ओ बाबा हमको आकर लिबरेट करो। गाइड बनो। तो पण्डा ठहरा ना। वह है जिस्मानी पण्डे। तो तुम हो रूहानी। अभी सभी को जाना है घर। इसलिए बाप को याद करना है। याद की यात्रा कहा जाता है। भक्ति मार्ग में याद करेंगे तो शिव को, शिव कह याद करेंगे या श्रीनाथ द्वारे जावेंगे अथवा जहाँ भी जावेंगे उनको याद करेंगे। वह सभी है जिस्मानी यात्राएँ। तुम जानते हो कितना समय हमने यात्राएँ की हैं। भक्ति की है। यह ल0ना0 है इनको भाकी तो नहीं पहन सकते हो। क्या इनको भाकी पहनेंगे? अभी तो स्मृति है ना कि हम यह बनते हैं। भाकी पहनेंगे वहाँ जब राधे कृष्ण आपस में मिलेंगे। शिव की भी पूजा करते हैं, शिवलिंग को कब भाकी पहनते हैं क्या! भाकी पहन ही नहीं सकते। बिन्दी है बिन्दी क्या भाकी पहनेगी। जब शरीर धारण करते हैं तो तब भाकी पहनते हैं। शिव तो है बिन्दी। (शिवलिंग को भाकी पहनते हैं) अच्छा समझो भाकी पहनते भी हैं; परन्तु है तो वह रांग ना। भाकी नहीं पहन सकते। आत्मा आत्मा को भी नहीं पहन सकते। न भाई–भाई को पहनते, न भाई बाप को पहन सकते हैं। तुम जानते हो वह है शिवबाबा हम उनके बच्चे हैं। वह तो भक्तिमार्ग की भाकी है। इन बातों को अभी तुम समझते हो। भक्तिमार्ग में तो कुछ भी मिलता नहीं। तो तुम जानते हो सच–2 शिवबाबा है उससे हम बेहद का वरसा ले रहे हैं। यह बनने लिए। शिवबाबा से खावें, शिवबाबा हमको खिलावे। यह सारी भावना है ना। यह तो है ही बिन्दी। वह काम करती है शरीर द्वारा। बाप को शरीर का लोन मिलता है तो क्यों नहीं बच्चों को खिलावें। बच्चे भी समझते हैं दादा के शरीर द्वारा शिवबाबा हमको खिलाते हैं। इस मुख द्वारा शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। यह है अविनाशी ज्ञान रत्न। याद की यात्रा से तुम पवित्र बनते हो न कि गंगा स्नान से। यह दुनिया में कोई नहीं जानते हैं। तुम समझते हो। वह भी पूरी धारणा होनी चाहिए। वास्तव में है एक ही प्वाइंट्स। गाया भी जाता है सेकण्ड में जीवनमुक्ति। बाप तो ज्ञान का सागर है ना। तुमको राजयोग सिखलाते हैं। कितनी वैल्युएबुल चीज़ है; परन्तु यह है धारण करने की बात। तुम नोट करते हो फिर रखते हो क्या। वह तो कागज ऐसे ही तोड़–फोड़ देते हैं; क्योंकि धारणा बुद्धि में हो गई तो फिर कागज़ की इतनी वैल्यु नहीं। यहाँ तुमको बाप सुनाते हैं जिससे तुम मनुष्य से देवता बनते हो। महाराजा–महारानी बन जाते हो। महाराजा महारानी ल0ना0 होते हैं सतयुग में फिर जो फेल होते हैं वह त्रेता में। डिनायस्टी चलती है ना। अभी टाइम कितना थोड़ा है। शास्त्रों में लाखों वर्ष लिख दिया है। लाखों वर्ष की बात तो स्मृति में रह नहीं सकती। तुमको अभी स्मृति आई है। अम्बा किसको कहा जाता है यह भी समझा है। अम्बा विश्व की बादशाही देती है। फिर वह विश्व की महारानी ल0 बनती है। तो उनसे भक्तिमार्ग में धन मांगते हैं। अभी बड़ी कौन ठहरी। अम्बा या लक्ष्मी? मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है। अम्बा के आगे रोते भी हैं जाकर। कितनी चीज़ें जाकर मांगते हैं। समझते हैं यह हमारी सभी मनोकामनाएँ पूरी करती है। लक्ष्मी से तो सिर्फ पैसा ही मांगते हैं; क्योंकि वह तो बहुत ही धनवान है ना। यही विश्व के मालिक पूज्य थे। जो फिर पुजारी बने हैं। तुम जानते हो हम भी पूज्य थे। फिर पुजारी बने हैं। इन भक्तिमार्ग के शास्त्रों ने कितना भुला दिया है। साधु–सन्त आदि सभी शास्त्र पढ़ते नीचे ही उतरते आये हैं। कहते हैं शास्त्र व्यास भगवान ने बनाया। कब बनाया वह तो कुछ भी पता नहीं। अभी

तुम जानते हो भक्तिमार्ग में यह शास्त्र बनते हैं। इन शास्त्रों को पढ़ने से कोई भी फायदा नहीं है। यह सभी है भक्तिमार्ग की सामग्री। भक्त तो सभी ठहरे ना। एक भगवान को याद करते हैं; क्योंकि समझते हैं भगवान आकर हमको भक्ति का फल देंगे। जबकि भगवान यहाँ आवेंगे तो फिर वहाँ जाने लिए पुरुषार्थ क्यों करते हैं। भगवान को तो यहाँ आकर फल देना है ना। इन बिचारों को पता नहीं है कि भगवान कब कैसे आते हैं। खुद आकर समझाते हैं मैं कैसे आता हूँ। मेरा जन्म अलौकिक है। मैं इस रथ में प्रवेश कर तुमको पढ़ाता हूँ। शिवबाबा रथ में आकर क्या करेंगे। किसको भी पता नहीं है। जिसने गीता सुनाई उनका नाम ही मिटा दिया है और उनके बदली कृष्ण का नाम डाल दिया है। बाकी शिवबाबा ने क्या किया। रथ पर तो बाप आते हैं। कृष्ण की आत्मा को तो अपना शरीर है ना। वह तो माता के गर्भ से जन्म लेते हैं। पिपर के पत्ते पर कृष्ण का बड़ा अच्छा चित्र दिखाते हैं। वह है गर्भ महल। जहाँ आराम से बैठा रहता है। सजा आदि तो कुछ भी नहीं खाते। बाप यह सब स्मृति में लाते हैं। दुनिया के आदि–मध्य–अन्त का राज़ ज्ञान और भक्ति क्या चीज़ है बाप बैठ समझाते हैं। और तो कोई चित्र आदि है नहीं। मंदिर देखो कितने बनाते हैं। ल0ना0 का मंदिर कितना फर्स्ट क्लास बनाया है। कहाँ तो दोनों गोरा दिखाते हैं। कहाँ फिर ल0 को गोरा ना0 को सांवरा बना देते हैं। कारण कुछ बता न सके। जिसको जो आया सो बना दिया। शिवलिंग भी काला दिखाते हैं। तो अब तुम बच्चों को सब स्मृति में दिलाते हैं। बाप बैठ समझाते हैं। वह ज्ञान को भी जानते हैं, भक्ति को भी जानते हैं। आधा कल्प तुम्हारी भक्ति चलती है। कितने ढेर शास्त्र आदि पढ़ते हो। और फिर कहते व्यास भगवान ने बनाई है। वन्डर है ना। भारत सच खण्ड था फिर झूठ खण्ड कैसे बना है। यह भी तुम्हारी बुद्धि में है। कारण तो चाहिए ना। शास्त्रों में क्या2 लिख दिया है। सब की ग्लानि करते रहते हैं। श्रीकृष्ण तो छोटा प्रिन्स वहाँ गीता की दरकार ही नहीं। सब सद्गति में है ना। वहाँ किसको बैठ सुनावेंगे। यह भी रांग है ना। भगवान तो एक ही है। भगवान को कितना रुलाया है उतना और किसकी को नहीं। बाप बच्चों को ही सब बातें अच्छी रीत बैठ समझाते हैं। यह ल0ना0 आदि चैतन्य में तो सुख ही सुख था। सब धर्म वाले उनको बहिस्त गार्डेन ऑफ अल्ला कहते हैं। अब बाप इसका कांटों के जंगल को फूलों का बगीचा बना रहे हैं। तुम जानते हो शिवबाबा इसमें देखते हैं कौ2 फूल बन रहे हैं। गार्डेन के किसम2 के वैराइटी फूल हैं। हरेक अपन को समझ सकते हैं हम किस प्रकार का फूल हूँ। जो अच्छे2 फूल हैं वह जरूर औरों को भी आप समान बनाने पुरुषार्थ करते हैं। बगीचे में तो अनेक प्रकार के फूल होते ही हैं। तो बाप यह सब स्मृति दिलाते हैं। यह नालेज की स्मृति में सदैव रहो। यह पढ़ाई है ना। यही साथ जानी है। आत्माओं को बाप कहते हैं यह जो तुमको पढ़ाता हूँ वह तुम साथ ले जाते हो। मेरे में जो नालेज है वह तुमको सुनाता हूँ। अभी आत्माओं को घर ले जाना है। फिर नई दुनिया में आवेंगे तो यह नॉलेज प्रायः लोप हो जावेगा। 84 का चक्र पूरा होता है बाप स्वर्ग की राजधानी स्थापन करते हैं। इसमें तो वैराइटी बनेंगे .....। एमऑबजेक्ट तो यह है नर से ना0 नारी से ल0 बनने का है। राजयोग कौन सिखलाते हैं। यह स्मृति अब आई है ना। सर्वशास्त्रमई शिरोमणि गीता ही गाई जाती है। क्या होता है कि सारी दुनिया पलटती है। और कोई भी शास्त्र से दुनिया पलटती नहीं है; क्योंकि वह बाप का शास्त्र नहीं है। वेद, शास्त्र, उपनिषद आदि कितने ढेर के ढेर हैं। वह सभी हैं भक्तिमार्ग के लिए। उनसे कोई फल मिलने की उम्मीद नहीं रहती। गीता से स्वर्ग की बादशाही मिलती है। इतने ढेर शास्त्र सभी भक्तिमार्ग के हैं। यह सब पढ़ते–2 नीचे ही गिरते आये हैं। अहंकार कितना है। समझते हैं हम तो शास्त्रों की अथॉरिटी है। बाप समझाते हैं यह भक्तिमार्ग के अथॉरिटी हैं। गीता, शास्त्र आदि पढ़ते ही आये हैं। सर्वशास्त्रमई शिरोमणि शास्त्र है गीता। पहले है यह गीता। बाकी पीछे हैं सभी शास्त्र। एक गीता झूठी तो सभी शास्त्र झूठे हो जाते। एमआबजेक्ट कुछ है नहीं। भगवान ने तो राजयोग सिखाया था। जिससे देवता बने थे। वह तुमको क्या सुनाते हैं। पुरानी कहानी बैठ सुनाते हैं। कहानी से मिलता है क्या। सो भी बड़ा गपोड़ा लगा दिया है। युद्ध के मैदान की बातें सब स्थूल रूप में ले गये हैं।

यह भी दिखलाया से(है) यादवों ने मूसल निकाली फिर कौरवों पाण्डवों की लड़ाई लगी। सभी खलास हो गये। बाकी 5 पाण्डव और एक कुत्ता रहा। वह भी पहाड़ों पर गल मरे। रिजल्ट कुछ भी नहीं। दन्त कथाएँ बन गई हैं। इसको कहा जाता है कनरस। होता कुछ भी नहीं। बाप समझाते हैं आधा कल्प कनरस सुनते आये हो। यह है ज्ञान की मुरली। फर्क देखो कितना है। कृष्ण की आत्मा भी अभी सुना रही है। बाप को ही आकर बच्चों को समझाना पड़ता है। बाप खुद कहते हैं हे बच्चों तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। हम तुमको बतलाते हैं। पहले2 तुम आये फिर तुमने इतने जन्म लिये। यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है। शिवबाबा तो जरूर तुमको ही सुनावेंगे ना। नहीं तो शिवबाबा किसको सुनावे। सिर्फ इनको कैसे बनावेंगे। तुम सभी को जब सुनाते हैं तब इनकी आत्मा भी सुनती है कानों द्वारा। नहीं तो इनको कैसे सुनावेंगे। तुमको सुनाते हैं तो यह भी सुनते हैं। बच्चे जानते हैं बाप हमको पढ़ाते हैं। कल्प2 हमने ऐसे चक्र लगाया है। अभी ड्रामा पूरा हुआ। यह पुराना वस्त्र अभी छोड़ देनी है। तुम्हारी आत्मा सबसे पुरानी तमोप्रधान है। आत्मा को ही सारा पार्ट मिला हुआ है। अन्त तक। यह सारा अविनाशी है। फिर से वही पार्ट बजावेंगे। आत्मा को पार्ट देखो कितना मिला हुआ है। इनको कहा जाता है वन्डर। कितनी छोटी आत्मा है। आत्मा में सारी नॉलेज नूँधी हुई है। वह कब विनाश को नहीं पाती है। अनादि अविनाशी ड्रामा है ना। अभी बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। बाप भी आत्माओं को बैठ सुनाते हैं। चक्र फिरता रहता है। 5000 वर्ष बाद फिर यही पार्ट रिपीट करेंगे। सभी दिन, सभी घंटे, सभी मिनट, सभी सेकण्ड होत न एक समान। बढ़ती जाती है। पार्ट शूट होता जाता है। यह बनी बनाई है ना। भगवानुवाच. .....भगवान बैठ पढ़ाते हैं। तो टीचर बनाना। कृष्ण को थोड़े ही टीचर कहेंगे। वह तो खुद ही स्कूल में पढ़ने जाते हैं। यह भी बच्चों को सा0 कराया हुआ है। फिर पिछाड़ी में भी तुमको बहुत सा0 होंगे। जितना2 घर नजदीक आता जाता है फिर तुमको खुशी होती जाती है। बहुत सा0 करेंगे। अभी तुमको इतना ध्यान में जाने नहीं देते हैं। यह है घूमना–फिरना। यह कोई ज्ञान वा योग नहीं। घूमने–फिरने से मार्कस नहीं होते हैं। यह भोग आदि भी गलाने की ड्रामा में नूँध है। इनकी इच्छा नहीं करनी चाहिए कि हम जावे यह करे। यह सभी है भक्ति। वह सिखलाते हैं ऐसे2 देवियों की भक्ति करो। पूजा करो। चण्डिका देवी का कितना मेला लगता है। अच्छा दर्शन हुआ; परन्तु उससे फायदा ही क्या। शिव का दीदार तो कर भी न सके। आत्मा भी बिन्दी है ना। दिखाते हैं रामकृष्ण अपने गुरु के सामने बैठा तो देखा उनकी आत्मा हमारे में प्रवेश हुई। अच्छ दीदार हुआ फिर क्या हुआ। कितना खुश हुआ। ऐसे दूसरी सोल प्रवेश कैसे कर सकती है। यह सिर्फ सा0 हुआ। कहते हैं वह अपनी स्त्री को माता2 कहते थे। जैसे बाप कहते हैं भाई बहन समझो तो क्रिमनल दृष्टि नहीं होगी। उसने फिर माता समझा कि दृष्टि क्रिमनल बदली सिवील हो। बाकी दूसरा कोई फॉलोअर नहीं निकला। यहाँ बाप समझाते हैं क्रिमनल दृष्टि न होनी चाहिए। फिर भी देखते हैं आँख तो बहुत ही धोखा देती है। सूरदास का मिसाल है ना। अनेक कथाएँ शास्त्रों की सुनते आये हैं। यह भी है कनरस। जन्म–जन्मान्तर कितनी कथाएँ सुनते आये हैं। अभी तुम समझते हो यह तो अन्तिम जन्म है। बाप से अभी ही स्वर्ग का वरसा लेना है। बाप बाप भी है, टीचर बन पढ़ाते भी हैं। गुरु बन पवित्र बनाते हैं। ऐसा तो कोई कह भी न सके। यह बेहद का बाप ही टीचर सद्गुरु बनते हैं। इसको कोई नहीं जानते। शिव की सारी पाग कृष्ण को दे दी है। कृष्ण की तो बहुत पूजा करते हैं। वर्त नेम निर्जल रखते हैं। उनकी पुरी में जाने लिए क्या2 करते हैं; परन्तु जा नहीं सकते। तुम समझते हो हम सच2 कृष्ण के पुरी में अब जावेंगे। तो अच्छी रीत पढ़ना पड़े। उसको कहा ही जाता है सत्य ना0 की कथा। नर से नारायण बनाने का रास्ता तुम बताते हो। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

बेहद का बाप और बेहद के बाप का इनहेरीटेन्स याद है?